आपातकाल में सृजन फुलवारी

अदिति रूसिया

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

आपातकाल में सृजन फुलवारी

अदिति रुसिया

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-5372-147-3
संपादक- डॉ. प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र - संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी
मुख्य कार्यालय - 15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331
दूरभाष- (कार्या.) 07633-253159
मोबाईल- 9424765259
ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाईट- www.antrashabdshakti
प्रथम संस्करण - 2020, अदिति रुसिया
मूल्य - 50.00 रूपये
मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

THE BOOK WRITTEN BY ADITI RUSIA

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

आपातकाल में सृजन फुलवारी

सादर नमन,

आज देश जिस भयावह स्थिति से गुज़र रहा है उस स्थिति में देश का हर एक व्यक्ति या ये कहें कि विश्व का प्रत्येक मानव आर्थिक, मानसिक और शारीरिक रुप से व्यथित है। कोरोना (covid19) जैसी महामारी ने पूरे विश्व को नैराश्य के दौर में लाकर खड़ा कर दिया है।

ऐसे समय में जब हमें अनुशासित रहना है, सामाजिक दूरी बनाकर सीमित संसाधनों में जीना है, एकदम से अपनी दिनचर्या को बदलकर एकाकी जीवन यापन का अभ्यास करना है और मन में महामारी की दशहत से होने वाली नकारात्मकता और निराशा को भी नियंत्रित करना है तब सबसे सही हल होता है खुद को रचनात्मकता से जोड़ लेना। जो व्यक्ति जिस कला से जुड़ा हो उसे मनः स्थिति के अनुरुप उसी कला में सृजनात्मक हो जाना चाहिए।

बस इसी विचार ने एक दिन प्रेरित किया कि अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों को एक सृजनात्मक सरप्राइज़ दिया जाए।

अन्तरा शब्दशक्ति और जीवन के सहभागी प्रिय 'समकित सुराना' से परामर्श किया तो उन्होंने भी सहर्ष हामी भर दी। मेरे संपादन के साथ तकनीकी संपादन की सारी जिम्मेदारी हमारे तकनीकि संपादक प्रिय 'संदीप सोनी' ने ले ली और इक्यावन दिन के लॉकडाउन में एक साथ 111 किताबों का निःशुल्क ईसंस्करण तैयार किया जिसका मुद्रित संस्करण देश के परिस्थितियाँ सामान्य होते ही रचनाकारों की इच्छानुसार सशुल्क किया जा सकेगा।

अन्तरा शब्दशक्ति संस्था के सभी सदस्यों ने सृजन को हमेशा प्रेरित किया है जिसके लिए मैं सभी की हृदय से आभारी हूँ।

आपातकाल में कुछ न करने की सज़ा को कुछ करके खत्म करने में सहयोगी बने समकित, संदीप-टीना सोनी, बच्चों और पूरे परिवार की आभारी हूँ जिन्होंने हर पल मुझे मजबूत बनाए रखा।

आशा है ये सरप्राइज़ सभी रचनाकारों को उत्साहित करेगा और पाठकों को हमारा यह प्रयास पसंद आएगा। हमें प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

सादर आभार

संस्थापक एवं संपादक
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
एवं पंजीकृत संस्था
डॉ प्रीति समकित सुराना

अनुक्रमणिका

1.	डरो न!	6
2.	स्वार्थी	7
3.	शंखनाद	8
4.	संदेश	9
5.	कोरोना	10
6.	विपदा	11
7.	तप	12
8.	मुसीबत	13
9.	कैद	14
10.	जीवनरक्षक	15
11.	बढ़े चलो!	16
12.	आत्मविश्वास	17
13.	एक दिया	18
14.	आओ मिल कर दीप जलाएँ	19
15.	वो सुबह कभी तो आएगी	20
16.	हाँ मुझे विश्वास है	21

डरो न!

डरो न, डरो न, बिल्कुल डरो न
कोरोना से तुम बिल्कुल डरो न

कुछ न करेगा तुमको कोरोना
गरम पानी रोज़ तुम पिया करो
डरो....

जितना भी तुम डरके रहोगे
उरना ही तुमको डराएगा कोरोना
डरो.....

बाहर का कुछ भी खाओ पियो न
फिर तुम देखो कुछ न करेगा ये कोरोना
डरो.....

हरी सब्बजियाँ खाओ मांस को छुओ न
भाग जाएगा एक दिन ख़ुद ही ये कोरोना

हैलो हाय छोड़ कर नमस्ते करो न
पास आने से डरेगा फिर कोरोना
डरो.....

मुँह पे मास्क लगाके तुम चलो न
फिर कैसे पास आ पाएगा कोरोना
डरो.....

स्वार्थी

हाँ!
कुछ देर के लिए मैं स्वार्थी हो गई थी
क्या करूँ माँ हूँ इसीलिए
शायद माँ की ममता जाग गई थी
हाँ!
कुछ देर के लिए
मैं ये भूल गई थी
जो बेटी है मेरी
अब वो छोटी नहीं बड़ी हो गई है
मेरी बेटी से पहले
अब वो एक डॉ बन गई
उसे अब खुद से ज़्यादा
माता पिता की चिंता हो गई
वो अपने फ़र्ज़ निभाने चली
मुझे ही ढाँढस बंधा
कुछ न होगा मुझे ये समझाने लगी
हाँ!
अब मेरी बेटी सयानी हो गई
खोल दी उसने आँखे
बता दिया
क्या होता है एक डॉ. का फ़र्ज़
समझा दिया चिंता में न रोना तुम माँ
करना आती है मुझको
अब खुद की हिफ़ाज़त!

शंखनाद

आज शंखनाद कर बता दिया
सारे हिंदुस्तान ने
चाहे आए कोई मुसीबत
होंगे हम सब साथ में,..
चाहे आए कोई बीमारी
आए कोई बड़ी महामारी
हम तो अपने फ़र्ज़ निभाएँगे
मिलकर इनको दूर भगाएँगे,..
ये था न केवल शंखनाद
ये था हमारी एकता का नाद
समझ सको तो समझ लो
अब जो भी हमसे टकराएगा
चूर-चूर वो हो जाएगा,...
सज्ज हो गए सभी
लड़ने हर लड़ाई हैं
जो करना है करके देख लो
प्रेम की जोत जलाई है,...

चाहे हो डॉ या नर्स
चाहे हो कोई सैनिक
या हो कोई सफ़ाई कर्मचारी
जान पे खेल
खेल रहे लड़ाई है,..
ये शंखनाद और घंटे,
ताली और थाली से
जन-जन में
जागरूकता आई है
देश बचाने लड़ने महामारी से
सबने क़सम खाई है,..
इस शंखनाद से गूंजा
सारा देश मानो लग रहा था
जैसे मना रहा देश
कोई बड़ा उत्सव है
सबके मुख थी ख़ुशियाँ
जैसे जीती हो कोई जंग बड़ी,...!

संदेश

धरती पर कैसा विध्वंस मचा है
चारों और कोहराम मचा है
स्थिति है देश की गम्भीर
समझ लो ये संदेश
बचा सको तो बचा लो देश को
करो न अब तुम अपनी मनमानी
कोरोना को मज़ाक़ न समझों
याद दिला देगा सबको दादी नानी
आज धरा को ज़रूरत है सबकी
जिसने सबका पालन पोषण किया
क्यों रुला रहे उसे आज सभी
धूँ धूँ करती जल रही धरा है
देख रहे तमाशा बन मूरख
अज्ञानी
जब रहेगी ये सुरक्षित
तब ही होगा सबका जीवन रक्षित
कौड़ी कौड़ी माया जोड़ी
काम न आएगी ये एक
न होगा कोई परिवार तुम्हारा
न होगा कोई यार तुम्हारा
अभी भी न देर हुई है
हो जाओ सचेत
बन संबल सब आगे आओ
कोरोना को दूर भगाओ
भीषण महामारी है ये
खान पान को सही बनाओ
मांस छोड़ शाकाहार बन जाओ
परिजनों के साथ समय बिताओ
आओ आज फिर बच्चे बन जाओ
तुम रहोगे सुरक्षित तभी होगा
देश सुरक्षित
आने वाली पीढ़ी को हम नया
पाठ सिखाए
आओ आज एक फिर
वेद पुराण का पाठ पढ़ाएँ
गीता, बाइबिल और क़ुरान
यही आएँगी सदा हमारे काम
फिर बनेगा सोने की चिड़िया
हमारा हिंदुस्तान
छोटी छोटी ख़ुशियाँ हम परिवार
संग बिताएँ
क्यों बाहर जा रोग बुलाएँ
दादी नानी की कहानियाँ
आज हम बच्चों को सुनाएँ
मोबाईल और टीवी छोड़
चलो एक बार फिर
चौपड़, कैरम बिछाएँ
रोक लगा दें महामारी पे
सहयोग करने आगे आए
चलो मिल जीवन जोत जलाएँ
ख़ुशियाँ धरा पर हम ले आएँ।

कोरोना

कोरोना कोरोना को....रोना
कर दिया सभी को परेशान
तुमने देखो कोरोना
न दिन को है चैन
न रात को आराम हमको
देखो तुम ही कोरोना
ऑफिस बंद हैं, शॉपिंग बंद है
सब है हैरान देखो कोरोना
बाज़ार सूने हैं, चौपाल सूने हैं
सूनी पड़ी है रोड सारी सब तो हैं
नारियाँ हो गईं व्यस्त सारी
उनको न मिली छुट्टी देखो कोरोना
सबको मिली है छुट्टी भारी
डॉक्टर और सैनिक पर
आई ज़िम्मेदारी भारी देखो कोरोना
मंदिर बंद हो गए
हो गए बंद मस्जिद
अब और क्या करोगे
तुम कहो न कोरोना
हाय हेलो सब भूल गए
सिखा दिया रामराम
अच्छा किया एक काम
तुमने कोरोना
मांस मटन सब खाना भूल गए
बना दिया सबको तुमने शाकाहार
बता दिया सबको
भारत की संस्कृति है सबसे महान
कोरोना कोरोना को...रोना
कर दिया सभी को परेशान
तुमने देखो कोरोना

विपदा

हे कृष्ण!
ये कैसी विपदा आन पड़ी
हाहाकार मचा है चारों ओर
न कोई राह आती नज़र
दिन ब दिन
ये संकट बढ़ रहा
जाएँ हम किस ओर
इस संकट की बेला में
उद्धार करो
कल्याण करो
तुम जग का
कहाँ गए हे अवतारी
अब फिर
तुमको लेना होगा
अवतरण
सृष्टि की रक्षा हेतु
हे कृष्ण मुरारी
यही है
हम सब की अरदास प्रभु
न करना तुम
हमें निराश प्रभु
अब आ भी जाओ
बनवारी
विपदा आन पड़ी अब भारी

तप

नवसंवत्सर आया है
नई आशा की किरण लाया है
जीवन जोत जलेगी देश में
ये संदेशा लाया है

ये पर्व है माँ जगजननी का
जो करती रक्षा दुष्टों से है
करती है विनाश दानवों का ये
सब संताप हर लेती अपने भक्तों का

कठिन घड़ी है आन पड़ी
विपदा आई भारी है
हे जगदंबे उद्धार करो
इस भीषण महामारी से सबकी रक्षा करो

अपने तप और बल से माँ
हम सबका तुम दुःख हरो
किए अपराध जो हमने
उन सबको तुम माफ़ करो

किया जो मानव ने प्रकृति से खिलवाड़ है
ये सब उसका ही दुष्परिणाम है
मूरख अज्ञानी बच्चों की माँ
तुम ही अब पालनहार हो

कठिन तपस्या कर माँ
हम बचाएँगे धरा
अपने तप के बल से माँ
फिर कर देंगे सारा जग हरा-भरा

मुसीबत

हे माँ अम्बे
हे जग जननी भवानी

रक्षा करो हमारी
इस मुसीबत की घड़ी में
उद्धार करो माँ
जन जन का
बेड़ा पार करो माँ
हे माँ अम्बे
हे जग जननी भवानी

सारा जग करता है
गुणगान तुम्हारा
बजता है सारे जग में
माँ जयकार तुम्हारा
हे माँ अम्बे
हे जग जननी भवानी

जब जब माँ देवों ने
संकट में तुमको पुकारा
दानव दलन कर माता
सब देवों को तुमने तारा
हे माँ जगदंबे
हे जग जननी भवानी

माँ तुम तो हो अंतर्यामी
भक्तों की समझो परेशानी
इस दानव रूपी महामारी से
माँ रक्षा करो हमारी
हे माँ जगदंबे
हे जग जननी भवानी

माँ कहते हैं तुम सुनती हो
दीन दुखियों की पुकार सदा
हम तो हैं दुखियारे माँ
ख़ुशियों से भर दो झोली माँ
जन जन का तुम कल्याण करो

हे माँ जगदंबे
हे जग जननी भवानी!

कैद

चार दीवारों में कैद ज़िंदगी
इसका भी अपना मज़ा है
हम कैद ज़रूर हैं
पर सुरक्षित हैं अपने घरों में
पूरा परिवार साथ है
मिल बाँट कर होते हैं काम
जिसका अलग आनंद है
जिसने न उठाई थी कभी
हाथों में झाड़ु
न लगाया था कभी पोछा
न किए थे कोई काम
पर आज इस कोरोना ने
थमा दी हाथ में झाड़ु
बड़ गए अपने आप ही
मदद के लिए हाथ
कभी न सोचा था जो
आज वो हो रहा है
कोई बर्तन तो कोई
कपड़े धो रहा है
न किसी से कोई शिकवे हैं
न शिकायत ही कोई
बस चुपचाप सब काम हो रहा है
ताज़ी हो गईं यादें पुरानी
वो एक थाली में बैठ खाना
सबका साथ मिल कर टीवी
देखना
आज फिर एक बार
निकल गए सबके घर कैरम
वो लूडो और ताश के पत्ते
जो खेले थे कभी साथ बैठ
आज फिर जमने लगी
महफ़िल पत्तों की
हार और जीत की
होने लगी बातें
फिर गूँज रहे हैं
घर में हँसी के ठहाके
ये कैद की ज़िंदगी भी
अब अच्छी लगने
क्योंकि ये ज़िंदगी जीने का
एक मौक़ा जो दे रही।

जीवनरक्षक

नमन कर रही सारी दुनिया आज तुम्हें कर बद्ध हो
जीवनरक्षक बने आज तुम जान पर अपनी खेलकर
चिंता न एक पल की अपनी
न अपने परिजनों की करते याद
बढें कदम कर्मपथ पर हैं
कर्म ही जीवन धर्म बनाया
जीवन दान दे लोगों को
खुद ही अपनी जान गँवाईं
नमन है ऐसे कर्मठ वीर जवानों को
जो निभा रहे कड़ी धूप में भी ड्यूटी
धन्य है वो सफ़ाई कर्मचारी
जो हमें सुरक्षित करने
अपनों की परवाह किए बिना दे रहे सेवाएँ
हमको धन्य है वो जननी
जिसने जनम दिया इन वीरों को
जो कर रहे सेवा निःस्वार्थ भाव से
अपनों से दूर रह बचाने अपने देश को
आज संकट की इस बेला में
ये संकट मोचन बन आए हैं
हरने दुःख संताप हमारा ये कर्मवीर आए हैं
रोगों से लड़ने को तुम हिम्मत सबको देते हो
कैसे इस बीमारी से बचना ये सीख हर रोज़ देते हो
कहीं कर रहे मोटिवेट तुम कहीं लगा रहे डंडे हो
कहीं सुरक्षित करने घरों को
तुम सड़क पर जान हाथ ले निकलो हो।

बढ़े चलो!

डरो नहीं
बढ़े चलो
बढ़े चलो
कर्तव्य पथ पर
डटे रहो
अंधेरे में कोई
रोशनी की किरण
नज़र आएगी
जो दिखाएगी राह
सभी को
करेगी मार्ग प्रशस्त
दूर होगा
देश पे आया
संकट
वो सुबह कभी तो आएगी
जो रोशन करेगी
ज़िंदगी
जैसे अंधेरे
देता है दीपक
रोशनी
बस निराश न होना यारों
ज़िंदगी से अपनी
बस मिलकर
जोत से जोत
तुम जलाना!

आत्मविश्वास

चाहे आ जाए लाख संकट
तुम न तनिक भी घबराना

आत्मविश्वास न कम होने देना
डट कर करना सामना तुम

आया है तूफ़ान ज़रूर
थम जाएगा ये एक दिन

कश्ती संभाल कर रखना अपनी
पार लग जाएगी एक दिन

अंधकार के बाद ही आता उजाला
रात के बाद ही होती है भोर

अमावस के बाद खिलती है चाँदनी
जल्दी ही आएँगी ख़ुशियाँ

छटेंगे दुःख के बादल घनघोर।

एक दीया

एक दीया डाक्टरों के नाम
एक दीया नर्सों के नाम
एक दीया पुलिसकर्मीयों के नाम
एक दीया सफ़ाई कर्मचारियों के नाम
एक दीया श्रद्धा और विश्वास का
एक दीया भाईचारे का
एक दीया सकरात्मकता का
एक दीया आत्मविश्वास का
एक दीया प्रीत का
आओ हम जलाएँ मिलकर
सारी नकारात्मकता
दूर करें आज
आओ दीपों को प्रज्वलित कर
बताएँ हम सबको
चाहे कितने भी संकट आ जाए
हम एक हैं, एक ही रहेंगे
करेंगे मिल
हर संकट का सामना
हर चेहरे पर होगी ख़ुशी
दीपक की लौ से
चमक उठेगी ज़िंदगी
दूर हो जाएगा सारा तम
जगमगा उठेगा सारा जग
आओ एक दीप जलाएँ
श्रद्धा और विश्वास से।

आओ मिल कर दीप जलाएँ

आओ मिल कर दीप जलाएँ
श्रद्धा और विश्वास का
भर दें सारे जग को हम
सकारात्मकता और आत्मविश्वास से

ये केवल एक दीप नहीं है
ये है ऊर्जा का स्रोत
आओ बढ़ाएँ एक कदम हम
सकारात्मकता की ओर

दीप जलेंगे घर घर
होगा ऊर्जा का संचार
वातावरण होगा निर्मल
बनेगा प्राणाधार

जब दीप जलेंगे घर घर
होगा सुरक्षित जन जन
यमराज भी भाग जाएँगे
न फटक पाएँगे घर घर

जोत से जोत जलाओ
जन जन में जागृति लाओ
ख़ुशियाँ फैलाओ घर घर
देश में अमन और शांति लाओ।

वो सुबह कभी तो आएगी

हाँ!
वो सुबह कभी तो आएगी
जब हम ले आएँगे
बारात तुम्हारे द्वारे
तुम डोली चढ़ आओगी द्वार
हमारे
वो सुबह कभी तो आएगी

हाँ!
वो सुबह कभी तो आएगी
अब जल्द ही खतम होगा
सभी का इंतज़ार
धरती अंबर जो थम से गए हैं
फिर चल पड़ेंगे एक बार
वो सुबह कभी तो आएगी

हाँ!
वो सुबह कभी तो आएगी
जो ले आएगी
सबके चहरों पर मुस्कान
खिल उठेंगे फिर बागों में फूल
गूंजेगी फिर भौरों की गुंजन
वो सुबह कभी तो आएगी

हाँ!
वो सुबह कभी तो आएगी
थमी हुई ज़िंदगी में हलचल मच
जाएगी
इंसान फिर मशीन बन जाएगा
सबकी ज़िंदगी पटरी पे
दौड़ती नज़र आएगी
वो सुबह कभी तो आएगी

हाँ!
वो सुबह कभी तो आएगी
जब स्कूल होंगे शुरू
फिर होगा
परीक्षा का टेंशन शुरू
वो सुबह कभी तो आएगी

हाँ!
वो सुबह कभी तो आएगी
जब होगा खत्म
दुल्हा-दुलहन का इंतज़ार
बजेंगे बैंड बाजे, सजेगी डोली
जिसमें बैठ आएगी, पिया के घर
गोरी
वो सुबह कभी तो आएगी

हाँ!
वो सुबह कभी तो आएगी
जो दूर हो गए अपने परिजनों से
उनको मिलाने की
कोई तो राह नज़र आएगी
वो सुबह कभी तो आएगी

हाँ!
वो सुबह कभी तो आएगी
जब होगी सबके चेहरों पे मुस्कान
गूँजेगा माँ भारती का गान
बनेगा विश्वगुरु हमारा प्यारा
हिंदुस्तान
वो सुबह जल्द ही आएगी
लेकर सबके चेहरों पे मुस्कान!

हाँ मुझे विश्वास है

हाँ मुझे विश्वास है फिर मुस्कुराएगा इंडिया
जल्दी ही छँट जाएँगे
महामारी के घने बादल
जो छाए हैं पूरे देश में
कैद में है आज जो, फिर मिलेगी आज़ादी उन्हें

हाँ मुझे विश्वास है कुछ न होगा
हमारे चिकित्सकों और नर्सों को
जो लड़ रहे महामारी से कर रहे हैं सेवा
ढूँढ ही लेंगे वो रास्ता
जीत लेंगे जंग ये, करके इसका ख़ात्मा

हाँ मुझे विश्वास है दे रहे हैं जो हमें सेवाएँ
दिनरात खड़े हो धूप में
जाया न होगी उनकी मेहनत
रंग लाएगी ज़रूर
ख़ुशियाँ ही ख़ुशियाँ होंगी, बदलेगा सब कुछ

हाँ मुझे विश्वास है फिर खिल उठेगा चमन
बागों में खिल उठेंगे फूल
डाल डाल पर कूँकेगी कोयली की गूंज
भ्रमर गीत फिर गाएँगे, फिर होगा पक्षियों का कलरव

हाँ मुझे विश्वास है अमावस की काली रात के बाद
आएगी पूनम की उजियारी रात
बिखेरने चाँदनी अपनी, लाएगी ख़ुशियाँ अपार
भरेंगे सबके भंडार, कोई न सोएगा भूखा!

है प्रमाण देशभक्ति का
आइए करें
सृजन शब्द से शक्ति का

रचनाकार

अदिति रूसिया

वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.)

Email- aditirusia@gmail.com

Mobile- 979043500

संपूर्ण विश्व पर कोरोना नामक महामारी का संकट मँडरा रहा है । इस महामारी से निजात पाने लोगों ने अपनी अपनी तरह से कोशिशें शुरू के दीं। लोगों की कलम भी इस कोरोना जैसी भीषण महामारी पर चल पड़ी। सभी ने अपनी अपनी लेखनी से इस देश के ऊपर आए संकट पर लिखना शुरू कर दिया। सरकार द्वारा कई नियम कानून बनाए गए। इन कड़े से कड़े नियमों का पालन जनता ने बखूबी निभाया और घर पर रह कर एक जुटता का परिचय दिया। कुछ मूरख अज्ञानी जो ये नहीं समझ पा रहे की देश पर जो संकट आया है और जो सख्ती बरती जा रही है वो आने वाली किसी बड़ी मुसीबत से बचने का मार्ग है जिसके कारण थोड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। घर पर रहते हुए जहाँ एक ओर सारा परिवार एक साथ है इस बात की खुशी है तो कहीं इस बात का दुःख भी है कि इस महामारी से पीड़ितों की रक्षा के लिए हमारे डॉ., हमारे सुरक्षाकर्मी, हमारे सफाई कर्मचारी अपनी जान हथेली पर रखकर उनका ध्यान रख रहे हैं। कड़ी धूप में दिनरात सड़कों पर तैनात रह अपना फर्ज निभा रहे हैं। जो घर पर हैं वो भी घर पर रहकर अपने कर्तव्य का निर्वहन बखूबी कर रहे हैं। सब अपने अपने कार्य बखूबी निभा रहे हैं। बस यही सब देख कर मन में जो भी विचार उत्पन्न हुए उन्हें अपनी कलम से कागज पर उतारने का प्रयास किया है।

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)

अन्तरा शब्दशक्ति

www.antrashabdshakti.com

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला- बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331

संपर्क- 9424765259, अणुडाकः antrashabdshakti@gmail.com

ANTRASHABDSHAKTI

मूल्य 50/-

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स

Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/